ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–०१
दिनांक- मंगलवार, ०४ जनवरी, २०२२

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय बेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 17.7 एवं 9.3 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 91 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 77 प्रतिशत, हवा की औसत गति 3.9 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 1.0 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 0.3 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 14.8 एवं दोपहर में 17.4 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(04–09 जनवरी, 2022)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 04–09 जनवरी, 2022 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के से मध्यम बादल छा सकते है। वैशाली, सारण, सिवान, मुजफ्फरपुर, मधुबनी, सीतामढ़ी, शिवहर, पूर्वी तथा पश्चिमी चम्पारण के जिलों में ८–९ जनवरी के आसपास कहीं कहीं हल्की वर्षा या बूंदा बूंदी हो सकती है तथा अन्य जिलों में आमतौर पर मौसम के शुष्क रहने की सम्भावना है।
- अधिकतम तापमान 15 से 17 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 6 से 8 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 7 से 10 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है। सिवान, सीतामढ़ी, शिवहर, पूर्वी तथा पश्चिमी चम्पारण के जिलों में ५ जनवरी को पुरवा हवा चलने की सम्भावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 60 से 70 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- वर्त्तमान मौसम में आलू,मटर,टमाटर, धनियाँ, लहसून एवं अन्य रबी फसलो में कृषक भाई झुलसा रोग की निगरानी करें। बदलीनुमा मौसम तथा वतावरण में नमी होने पर यह बीमारी फसलों में काफी तेजी से फैलती है। इस रोग में फसलों की पत्तियों के किनारे व सिरे से झुलसना प्रारंभ होती है जिसके कारण पूरा पौधा झुलस जाता है। इस रोग के लक्षण दिखने पर २.५ ग्राम डाई-इथेन एम० ४५ फफूँदनाशक दवा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर समान रुप से फसल पर २-३ छिड़काव १० दिनों के अन्तराल पर करें।
- नवम्बर माह के शुरु में बोयी गई रबी मक्का की फसल जो ५५ से ६० दिनों की अवस्था में है। इन फसलों में ५० किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का व्यवहार कर मिट्टी चढ़ावें। मक्का की फसल में तना बेधक कीट की निगरानी करें। इसकी सूंडिया कोमल पत्तियों को खाती है तथा मध्य कलिका की पत्तियों के बीच घुसकर तने में पहुँच जाती है। तने के गुद्दे को खाती हुई जड़ की तरफ बढ़ती हुई सुरंग बनाती है। जिससे मध्य कलिका मुरझायी नजर आती है जो बाद में सुख जाती है। एक ही पौधे में कई सूंडिया मिलकर पौधें को खाती है। इस प्रकार फसल को यह काफी नुकसान पहुचाती है। उपचार हेतु फसल में फोरेट १० जी० या कार्बोफ्यूरान ३ जी० का ७-८ दाना प्रति गाभा प्रति पौधा दें। फसल में अधिक नुकसान होने पर डेल्टामिथ्रिन २५०-३०० मि०ली० प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव मौसम साफ रहने पर ही करें।
- गेहूँ की ३० से ३५ दिनों (पहली सिंचाई के बाद) की अवस्था जिसमें कई प्रकार के खर-पतवार गेहूँ में उग आते है। इन खरपतवारों का विकास काफी तेजी से होता है और ये गेहूँ की बढ़वार को अत्यधिक प्रभावित करती है। जिससे उपज में कमी आती है। इन सभी प्रकार के खरपतवारों के रोकथाम हेतु सल्फोसल्फयुरॉन ३३ ग्रम प्रति हेक्टर एवं मेटसल्फयुरॉन २० ग्राम प्रति हेक्टर दवा ५०० लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में छिड़काव करें। बिलम्ब से बोयी गयी गेहूँ की फसल जो २१ से २५ दिनों की हों गयी हो ३० किलो नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें।
- सरसों में सफेद रतुआ (व्हाईट रस्ट) रोग की निगरानी करें। इस रोग का प्रकोप फसल में दिखने पर इसके बचाव हेतु क्लोरथालोंनील दवा १ ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव मौसम साफ रहने पर ही करें।
- प्याज का पौध जो कि ५०-५५ दिनों का हो गया हो, तैयार क्यारी में पाँक्ति से पाँक्ति की दुरी १५ से०मी०, पौध से पौध की दूरी १० से०मी० पर रोपाई करें। पौध की रोपाई अधिक गहराई में नहीं करें। रोपाई के १०-१५ दिनों पूर्व १५-२० टन गोबर की खाद डाले। खेत की अन्तिम जुताई में ६० किलो ग्राम नेत्रजन, ८० किलो ग्राम फॉसफोरस, ८० किलो ग्राम पोटास तथा ४० किलो ग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर का व्यवहार करें।
- बैगन की फसल को तना एवं फल छेदक कीट से बचाव हेतु ग्रसित तना एवं फलो को इकठा कर नष्ट कर दें, यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पिनोसेड ४८ इ०सी०/ १ मि०ली० प्रति ४ ली० पानी की दर से छिड़काव मौसम साफ रहने पर ही करे।
- मटर की फसल में चूर्णिल फफूँदी (पाउडरी मिल्डयु) रोग की निगरानी करें, जिसमें पत्तीयों, फलों एवं तनों पर सफेद चूर्ण दिखाई पड़ती है। इस रोग से वचाव के लिए फसल में कैराथेन दवा का १ मिलीलीटर प्रति लीटर पानी अथवा सल्फेक्स दवा का ३ ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- सब्जियों में निकाई-गुड़ाई करें। बैगन की फसल को तना एवं फल छेदक कीट की निगरानी करें। फसल में कीट का प्रकोप दिखने पर रोकथाम हेतु सर्वप्रथम ग्रसित तना एवं फलो को इकठा कर नष्ट कर दें तथा फसल में स्पिनोसेड ४८ ई०सी०/ १.० मि०ली० प्रति ४ ली० पानी की दर से छिड़काव करे। कीटनाशक दवा के तैयार घोल में गोंद १.० मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से अवश्य मिलावें।
- तापमान में गिरावट के कारण दुधारु पशुओं के दुध उत्पादन में आयी कमी को दूर करनें के लिए हरे एवं शुष्क चारे के मिश्रण के साथ नियमित रुप से ५० ग्राम नमक, ५० से १०० ग्राम खनिज मिश्रण प्रति पशु एवं दाना खिलावें। बिछावन के लिए सुखी घास या राख का उपयोग करें।

आज का अधिकतम तापमानः 17.2 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 4.2 डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः 7.5 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.2 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी